अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) कषाय और योग के निमित्त से आत्मा के साथ लगे हुए कार्मण पुद्गलो को कहते हैं-
(क) दर्शन (ख) ज्ञान
(ग) कर्म (घ) तप (ग)

(ii) प्रत्याख्यानावरण कषाय की स्थिति होती है-
(क) चार माह (ख) दो माह
(ग) एक माह (घ) अन्तर्मुहूर्त्त (क)

(iii) संज्वलन क्रोध मोहनीय कर्म की प्रकृति है-
(क) सम्यक्त्व मोहनीय (ख) कषाय मोहनीय
(ग) नो कषाय मोहनीय (घ) मिथ्यात्व मोहनीय (ख)

(iv) समचतुरस्र है-
(क) अंगोपांग (ख) बंधन
(ग) संहनन (घ) संस्थान (घ)

(v) गोत्र कर्म कितने प्रकार से भोगा जाता है-
(क) 12 (ख) 8
(ग) 16 (घ) 14 (ग)

(vi) मोहनीय कर्म की जघन्य स्थिति है-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) 20 कोडा कोडी सागरोपम
(ग) 12 मुहूर्त्त (घ) 8 मुहूर्त्त (क)

(vii) पहली नारकी की आगति होती है-
(क) 40 की (ख) 25 की
(ग) 20 की (घ) 30 की (ख)

(viii) दूसरे देवलोक की आगति है-
(क) 50 (ख) 16
(ग) 40 (घ) 17 (ग)

(ix) देव गति के भेद हैं-
(क) 563 (ख) 371
(ग) 303 (घ) 198 (घ)

(x) भुजपरिसर्प की गति है-
(क) 523 (ख) 517
(ग) 521 (घ) 527 (ख)

(xi) पुरुष वेद की गति है-
(क) 285 (ख) 276
(ग) 563 (घ) 395 (ग)

(xii) मिश्र गुणस्थान के योग पाये हैं-
(क) 13 (ख) 12
(ग) 14 (घ) 10 (घ)

(xiii) सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 4 (ख) 5
(ग) 6 (घ) 2 (क)

(xiv) रूपी अरूपी का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-
(क) उत्तराध्ययन सूत्र (ख) भगवती सूत्र
(ग) नन्दी सूत्र (घ) दशवैकालिक सूत्र (ख)

(xv) 5 उपयोग लेकर आते हैं, 5 उपयोग लेकर निकलते हैं-
(क) वाणव्यन्तर (ख) पाँच अनुत्तर विमान
(ग) भवनपति (घ) पहला देवलोक (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) मोहनीय कर्म आत्मा के क्षायिक समकित तथा अनन्त वीतरागता गुण की घात करता है। (हाँ)

(ii) प्रत्याख्यानावरण कषाय में मरने वाला जीव देवगति में जाता है। (नहीं)

(iii) अशुभ नामकर्म जीव 4 कारणों से बान्धता है। (हाँ)

(iv) आयु कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट 33 सागरोपम की होती है। (हाँ)

(v) तीव्र क्रोध करने से जीव वेदनीय कर्म बांधता है। (नहीं)

(vi) पहली से सातवीं नारकी तक के जीव आयुष्य पूर्ण कर सम्यक् दृष्टि बन सकते हैं। (हाँ)

(vii) केवली की गति मोक्ष की होती है। (हाँ)

(viii) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के जलचर दूसरी नरक तक उत्पन्न होते हैं। (नहीं)

(ix) भवनपति से लेकर आठवें देवलोक तक के देवता काल कर तिर्यंच व मनुष्य गति में उत्पन्न हो सकते हैं। (हाँ)

(x) तीर्थंकर की आगति 82 की होती है। (नहीं)

(xi) जमा हुआ कठोर पानी जो कभी पिघले नहीं, उसे घनोदधि कहते हैं। (हाँ)

(xii) क्षीण मोहनीय गुणस्थान में 6 लेश्या पायी जाती हैं। (नहीं)

(xiii) गुरु महाराज आदि की सेवा-शुश्रूषा करने से प्राप्त बुद्धि वैनयिकी बुद्धि कहलाती है। (हाँ)

(xiv) भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषि में जीव 8 उपयोग लेकर आते हैं तथा 5 उपयोग लेकर जाते हैं। (हाँ)

(xv) पाँच स्थावर में जीव 2 उपयोग लेकर जाते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i)	संस्थान	(क) 28	6
(ii)	मोहनीय की प्रकृतियाँ	(ख) 8	28
(iii)	अरति	(ग) 6	नो कषाय
(iv)	देवगति	(घ) 6	नामकर्म प्रकृति
(v)	प्रत्येक प्रकृति	(च) नोकषाय	8
(vi)	महा आरम्भ	(छ) नामकर्म प्रकृति	नरकायु
(vii)	अकर्मभूमिज	(ज) नरकायु	30
(viii)	परमाधार्मिक	(झ) 30	15
(ix)	आगति 38	(य) 15	तीर्थंकर
(x)	आगति 276	(र) तीर्थंकर	15
(xi)	मनुष्य गति के भेद	(ल) 15	303
(xii)	पहले गुणस्थान में लेश्या	(व) 303	6
(xiii)	तनुवाय	(क्ष) 12	रूपी
(xiv)	उपयोग के भेद	(त्र) 5 उपयोग	12
(xv)	तीन विकलेन्द्रिय में उपयोग	(ज्ञ) रूपी	5 उपयोग

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मैं केवलज्ञान तथा यथाख्यात चारित्र नहीं आने देता। संज्वलन कषाय

(ii) मेरा क्रोध बालू रेत में खींची लकीर के समान है। प्रत्याख्यानावरण

(iii) मेरी जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त है। वेदनीय

(iv) मेरा बंध जीव 6 प्रकार से करता है। ज्ञानावरणीय कर्म/दर्शनावरणीय कर्म/मोहनीय कर्म

(v) मुझमें मरने वाला जीव नरक गति में जाता है। अनन्तानुबन्धी कषाय

(vi) मेरी 93 अथवा 103 प्रकृतियाँ हैं। नामकर्म

(vii) मेरा एक भेद 'सीला' है। नरक गति

(viii) मेरी आगति 363 की है। सम्यक् दृष्टि/मिश्र दृष्टि

(ix) मेरी गति मोक्ष की है। केवली की गति/तीर्थंकर की गति

(x) मेरी आगति 32 की तथा गति 14 की है। वासुदेव

(xi) मैं सातवीं नारकी में उत्पन्न हो सकने वाला तिर्यंच का भेद हूँ। जलचर

(xii) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें 4 उपयोग होते हैं। सूक्ष्म संपराय

(xiii) मेरी प्राप्ति अभ्यास व विचार करने से होती है। कार्मिकी बुद्धि

(xiv) मैं उपयोग का ग्यारहवाँ भेद हूँ। अवधि दर्शन उपयोग

(xv) मुझमें जीव 7 उपयोग लेकर जाते हैं। मनुष्य में

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय कर्म की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

उ. जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट 30 कोडाकोडी सागरोपम।

(ii) देवायु बंध का अंतिम कारण लिखिए।

उ. अकाम निर्जरा

(iii) मोहनीय कर्म कितने प्रकार से जीव बांधता है ? प्रथम प्रकार लिखिए।

उ. छः प्रकार से, तीव्र क्रोध करने से।

(iv) दर्शनावरणीय कर्म का उदय (फल) जीव कितने प्रकार से प्राप्त करता है ?

उ. नौ प्रकार से

(v) दूसरी नारकी की गति कितनी है, उसके भेद लिखिए।

उ. 40 की, 15 कर्मभूमिज मनुष्य 5 सन्नी तिर्यंच, इन 20 के पर्याप्त अपर्याप्त।

(vi) किसकी गति अमर है और क्यों ?

उ. बलदेव की, क्योकिं वे नियमा साधु बनते हैं। अथवा मिश्र दृष्टि, क्योंकि मिश्रदृष्टिपने में जीव काल नहीं करता है।

(vii) सयोगी केवली गुणस्थान में योग, उपयोग व लेश्या कितनी हैं ?

उ. योग-7, उपयोग-2, लेश्या-1

(viii) रूपी अरूपी के थोकड़े में पुद्गल के कितने भेद हैं ?

उ. चतुस्पर्शी, अष्टस्पर्शी दो भेद हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) किसके प्रभाव से जीव ऊँच-नीच कुलों में उत्पन्न होता है तथा जीव के किस गुण को प्रकट नही होने देता ?

उ. गोत्र कर्म, अगुरुलघु गुण को प्रकट नहीं होने देता है।

(ii) दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. 1. मिथ्यात्व मोहनीय 2. मिश्र मोहनीय 3. सम्यक्त्व मोहनीय

(iii) 8 स्पर्श के नाम लिखिए।

उ. ठण्डा, गर्म, रूक्ष, स्निग्ध, खुरदरा, कोमल, हल्का, भारी।

(iv) नवमें देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध विमान तक के देवों की आगति व गति लिखिए।

उ. आगति 15 की (15 कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त)

गति 30 की 15 कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त के अर्याप्त।

(v) हेमवत, ऐरण्यवत के युगलिक तथा 56 अन्तर्द्वीप के युगलिक आयुष्य पूर्ण कर कहाँ तक उत्पन्न होते हैं ?

उ. हेमवत हिरण्यत के युगलिक पहले देवलोक तक 56 अन्तर्द्वीप के युगलिक भवनपति एवं वाणव्यन्तर तक उत्पन्न होते हैं।

(vi) देशविरति श्रावक गुणस्थान में योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।

उ. योग-12, उपयोग-6, लेश्या-6

(vii) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

उ. 1. घनवाय 2. तनुवाय

घनवाय- जमी हुई कठोर वायु (पिघले हुए घी के समान)

तनुवाय- पतली हल्की वायु (तपाये हुए घी के समान)

(viii) पहली, दूसरी, तीसरी नारकी में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ? संख्या तथा नाम लिखिए।

उ. 8 उपयोग- 3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 2 दर्शन (अचक्षु व अवधि दर्शन)

7 उपयोग लेकर निकलते हैं। 3 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन (अचक्षु व अवधि दर्शन)।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) वस्तु के विशेष धर्म को जानना कहलाता है-
(क) ज्ञान (ख) दर्शन
(ग) चारित्र (घ) तप (क)

(b) दर्शन मोहनीय कर्म की प्रकृतियाँ हैं-
(क) 2 (ख) 5
(ग) 9 (घ) 3 (घ)

(c) 'कुब्जक' है-
(क) संहनन (ख)संस्थान
(ग) संघातन (घ) शरीर (ख)

(d) संज्वलन लोभ की जघन्य स्थिति होती है-
(क) 15 दिन (ख) 1 महीना
(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) 2 माह (ग)

(e) साता वेदनीय कर्म कितने प्रकार से भोगा जाता है-
(क) 8 (ख) 12
(ग) 14 (घ) 6 (क)

(f) तिर्यंचायु बन्ध का कारण नहीं है-
(क) माया करने से (ख) गूढ़ माया करने से
(ग) महा आरम्भ करने से (घ) असत्य बोलने से (ग)

(g) गौत्र कर्म की प्रकृतियाँ हैं-
(क) 2 (ख) 5
(ग) 9 (घ) 12 (क)

(h) मनुष्य गति के भेद हैं-
(क) 48 (ख) 303
(ग) 14 (घ) 198 (ख)

(i) सातवीं नरक की आगति होती है-
(क) 18 (ख) 16
(ग) 19 (घ) 20 (ख)

(j) जलचर की गति होती है-
(क) 527 (ख) 521
(ग) 523 (घ) 517 (क)

(k) पृथ्वीकाय की गति है-
(क) 243 (ख) 395
(ग) 179 (घ) 50 (ग)

(l) वायुकाय के जीव आयुष्य पूर्ण कर किस गति में उत्पन्न होते हैं-
(क) नरक गति (ख) तिर्यंच गति
(ग) मनुष्य गति (घ) देवगति (ख)

(m) मिश्र गुणस्थान में योग पाये जाते हैं-
(क) 13 (ख) 10
(ग) 9 (घ) 5 (ख)

(n) पहले गुणस्थान में लेश्या पाई जाती हैं-
(क) 6 (ख) 3
(ग) 1 (घ) 4 (क)

(o) निम्न में से अरूपी है-
(क) भाव लेश्या (ख) वैक्रिय शरीर
(ग) दो गंध (घ) कार्मण शरीर (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) वस्तु के सामान्य धर्म को जानना दर्शन कहलाता है। (हाँ)
(b) मोहनीय कर्म अनन्त वीतरागता नामक गुण की घात करता है। (हाँ)
(c) अनन्तानुबंधी कषाय में मरने वाला जीव तिर्यंच गति में जाता है। (नहीं)
(d) जुगुप्सा, नोकषाय मोहनीय का एक भेद है। (हाँ)
(e) नाराच, संस्थान का एक भेद है। (नहीं)
(f) असाता वेदनीय कर्म 12 प्रकार से बंधता है। (हाँ)
(g) 'मन की सरलता' से जीव के अशुभ नामकर्म का बंध होता है। (नहीं)
(h) वनस्पतिकाय के 6 भेद होते हैं। (हाँ)
(i) सम्मूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। (हाँ)
(j) श्रावक जी की आगति 276 की होती है। (हाँ)
(k) उरपरिसर्प पाँचवीं नरक तक ही उत्पन्न हो सकते हैं। (हाँ)
(l) जीव काल करके जहाँ उत्पन्न होता है, उसे आगति कहते हैं। (नहीं)
(m) अयोगी केवली गुणस्थान में एक लेश्या होती है। (नहीं)
(n) संसार में जो पुद्गल दृष्टिगोचर होते हैं, वे अष्टस्पर्शी स्कन्ध ही होते हैं। (हाँ)
(o) 'अवाय' मतिज्ञान का एक भेद है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	संहनन	(क) नो कषाय मोहनीय	6
(b)	सातवीं नरक में उपयोग	(ख) शुभ नाम कर्म	53
(c)	शहद लगी तलवार	(ग) बलदेव	वेदनीय कर्म
(d)	आगति-83	(घ) 4	बलदेव
(e)	वर्ण	(च) वेदनीय कर्म	5
(f)	सम्मूर्च्छिम मनुष्य	(छ) 7	अपर्याप्त अवस्था
(g)	पुरुष वेद	(ज) 5	नोकषाय मोहनीय
(h)	परमाधामी	(झ) 198	15
(i)	केवली की आगति	(य) 6	108
(j)	स्थावर	(र) रूपी	10
(k)	11वें गुणस्थान में उपयोग	(ल) 10	7
(l)	विसंवाद रहितता	(व) 53	शुभ नाम कर्म
(m)	घनवाय	(क्ष) 108	रूपी
(n)	देवायु के कारण	(त्र) अपर्याप्त अवस्था	4
(o)	देवगति	(ज्ञ) 15	198

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a) मैं सर्वविरति संयम नहीं आने देता। प्रत्याख्यानावरण कषाय
(b) मैं जीव के अगुरुलघु गुण को प्रकट नहीं होने देता हूँ। गोत्र कर्म
(c) मेरा क्रोध पर्वत की दरार के सामन है। अनन्तानुबंधी

(d) मेरा बंध आठ प्रकार के मद करने से होता है। नीच गोत्र
(e) मेरा उत्कृष्ट अबाधाकाल 7 हजार वर्ष है। मोहनीय कर्म
(f) मेरी जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त है। वेदनीय (साता वेदनीय)
(g) मेरा बंध अज्ञान तप एवं अकाम निर्जरा के कारण होता है। देवायु
(h) मैं नरक गति का पाँचवाँ भेद हूँ। अरिष्टा
(i) मेरी आगति 82 एवं गति 14 की है। चक्रवर्ती
(j) मेरी गति अमर है। मिश्र दृष्टि/बलदेव
(k) तेउकाय, वायुकाय के जीव आयुष्य पूर्ण कर मेरी गति में ही उत्पन्न होते हैं। तिर्यंच गति
(l) मैं सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का ऐसा भेद हूँ, जो दूसरी नरक तक ही उत्पन्न हो सकता हूँ। भुज परिसर्प
(m) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें योग एवं लेश्या नहीं पाई जाती है। अयोगी केवली (14वाँ)
(n) मेरी प्राप्ति गुरु महाराज आदि की सेवा शुश्रूषा करने से होती है। वैनयिकी बुद्धि
(o) मैं उपयोग का आठवाँ भेद हूँ। विभंग ज्ञान/अवधि अज्ञान

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ कितनी है ?
9 (चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल दर्शनावरण, निद्रा, निद्रा-निद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला और स्त्यानगृद्धि)

(b) नरकायु बंध के अंतिम दो कारण लिखिए।
-मांस का सेवन करने से।
-पंचेन्द्रिय जीवों की घात करने से।

(c) कर्म किसे कहते हैं ?
कषाय और योग के निमित्त से आत्मा के साथ लगे हुए दूध पानी की तरह एकमेव हुए कार्मण पुद्गलों को कर्म कहते हैं।

(d) वासुदेव की आगति भेद सहित लिखिए।
वासुदेव की आगति 32 की- (वैमानिक में से 5 अनुत्तर विमान को छोड़कर 30 वैमानिक देवता एवं पहली, दूसरी नरक, इनके पर्याप्त)

(e) सम्यग्दृष्टि की आगति एवं गति के भेदों की मात्र संख्या लिखिए।
आगति-363 की, गति-282 की

(f) सातवें गुणस्थान में कौन-कौनसी लेश्या मिलती हैं ?
तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या।

(g) मतिज्ञान के चार भेदों के नाम लिखिए।
अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा।

(h) 'मनुष्य में' कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ?
मनुष्य में जीव 7 उपयोग लेकर जाते हैं-3 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन-अचक्षु व अवधिदर्शन।
8 उपयोग लेकर निकलते हैं- 3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 2 दर्शन।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) प्रत्येक प्रकृति के आठ भेदों के नाम लिखिए।
1.अगुरुलघु, 2. उपघात, 3.पराघात, 4. उच्छ्वास, 5. आतप, 6. उद्योत, 7. निर्माण और 8. तीर्थंकर नाम।

(b) कौन-कौनसे मद करने से नीच गौत्र का बंध होता है ?
1.जाति (मातृपक्ष), 2. कुल (पितृपक्ष), 3. बल, 4. रूप, 5.तप, 6. श्रुत, 7. लाभ और 8. ऐश्वर्य मद करने से।

(c) तीर्थंकर की आगति एवं गति समझाइए।

तीर्थंकर की आगति 38 की- 35 वैमानिक देवता (3 किल्विषी छोड़कर) और पहली से तीसरी नरक, इन सबके पर्याप्त।

गति- मोक्ष की।

(d) असाता वेदनीय की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति तथा अबाधा काल लिखिए।

असाता वेदनीय की जघन्य स्थिति एक सागरोपम के 3/7 भाग (सात भागों में तीन भाग) में पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की, उत्कृष्ट तीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम की है। इसका अबाधाकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष का है।

(e) सातवें गुणस्थान में कितने योग होते हैं, योगों का नामोल्लेख भी कीजिए।

9 योग- 4 मन के, 4 वचन के, 1 औदारिक काय योग।

(f) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

1. घनोदधि 2. औत्पातिकी 3. वीर्य

1. धनोदधि- जमा हुआ कठोर पानी (जमें हुए घी के समान) जो कभी पिघले नहीं।

2. औत्पातिकी- जो बुद्धि बिना देखे, सुने और सोचे ही पदार्थों को सहसा ग्रहण करके कार्य को सिद्ध कर दे।

3. वीर्य- आत्मिक शक्ति (जीव प्रभाव)

(g) उपयोग के थोकड़े का उल्लेख किस सूत्र में तथा कहाँ किया गया है ?

श्री भगवती सूत्र के 13वें शतक के पहले-दूसरे उद्देशक में।

(h) तीन विकलेन्द्रिय में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ? समझाइए।

तीन विकलेन्द्रिय में जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं-2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 1 अचक्षुदर्शन।

3 उपयोग लेकर निकलते हैं- 2 अज्ञान, 1 अचक्षुदर्शन

कक्षा : द्वितीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) अमरत्व गुण के प्रकट होने में बाधक कर्म है-
(क) गोत्र (ख) नाम
(ग) आयु (घ) मोहनीय (ग)

(b) जीव के साथ न्यूनाधिक परमाणु वाले कर्म स्कन्धों का बंध होना कहलाता है-
(क) प्रकृति बंध (ख) स्थिति बंध
(ग) अनुभाग बंध (घ) प्रदेश बंध (घ)

(c) मिश्र गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं-
(क) 10 (ख) 12
(ग) 13 (घ) 15 (क)

(d) केवली की आगति में तिर्यंच के कितने भेद लिये हैं -
(क) 46 (ख) 08
(ग) 20 (घ) 05 (ख)

(e) स्थलचर कौनसी नरक तक जा सकते हैं -
(क) चौथी (ख) तीसरी
(ग) छठी (घ) पहली (क)

(f) किस गुणस्थान में दर्शनोपयोग नहीं माना है -
(क) मिश्र (ख) सास्वादन
(ग) सूक्ष्म संपराय (घ) अयोगी केवली (ग)

(g) 4 बुद्धि में कौनसा भंग पाया जाता है-
(क) गुरु (ख) लघु
(ग) गुरु लघु (घ) अगुरुलघु (घ)

(h) तीन विकलेन्द्रिय में जीव उपयोग लेकर जाते हैं-
(क) 03 (ख) 05
(ग) 07 (घ) 06 (ख)

(i) पाँचवीं नरक से निकला हुआ जीव बन सकता है-
(क) सम्यग्दृष्टि (ख) श्रावक
(ग) साधु (घ) चक्रवर्ती (ग)

(j) अशुभ नाम कर्म के बंध का कारण है-
(क) ईर्ष्या भाव (ख) वचन की वक्रता
(ग) हीन स्वर (घ) अनिष्ट स्थिति (ख)

(k) शराब पीने से मनुष्य अपना मान भूल जाता है, यह किस कर्म के कारण होता है-
(क) ज्ञानावरणीय (ख) अन्तराय
(ग) दर्शनावरणीय (घ) मोहनीय (घ)

(l) अप्रत्याख्यानावरण मान को किससे उपमित किया गया है-
(क) वज्र का स्तम्भ (ख) बैंत का स्तम्भ
(ग) हड्डियों का स्तम्भ (घ) काष्ट का स्तम्भ (ग)

(m) किस कर्म का अबाधाकाल होता भी है तथा नहीं भी होता है-
(क) आयु (ख) वेदनीय
(ग) नाम (घ) अन्तराय (क)

(n) कौनसी नरक तक से निकला हुआ जीव बलदेव बन सकता है-
(क) पहली (ख) दूसरी
(ग) तीसरी (घ) चौथी (ख)

(o) 5 उपयोग लेकर जाते हैं और 8 उपयोग लेकर निकलते हैं -
(क) विकलेन्द्रिय में (ख) सातवीं नरक में
(ग) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में (घ) अनुत्तर विमान में (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) अनंतानुबंधी चौक का बंध व उदय रहते हुए जीव प्रथम गुणस्थान में काल करके सिर्फ नरक में ही जाता है। (नहीं)

(b) 'अकाम निर्जरा' देवायु बंध का कारण है। (हाँ)

(c) वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त होती है। (नहीं)

(d) दान में बाधा डालने वाला अन्तराय कर्म है। (हाँ)

(e) पहले किल्विषी की आगति 30 की है। (हाँ)

(f) सम्यग्दृष्टि की गति 363 की है। (नहीं)

(g) पृथ्वीकाय, अप्काय एवं वनस्पतिकाय के जीव 64 जाति के देवों में उत्पन्न हो सकते हैं। (नहीं)

(h) 56 अंतर्द्वीप के युगलिक भवनपति-वाणव्यन्तर तक ही जाकर उत्पन्न हो सकते हैं। (हाँ)

(i) जीव मिश्र गुणस्थान में वैक्रिय लब्धि का प्रयोग कर सकता है। (नहीं)

(j) अप्रमत्त संयत गुणस्थान में 6 लेश्या होती है। (नहीं)

(k) परमाणु से लेकर असंख्यात प्रदेशी स्कंध तक सभी पुद्गल चतुस्पर्शी होते हैं। (हाँ)

(l) बल और वीर्य की संयुक्त प्रवृत्ति उत्थान है। (नहीं)

(m) ज्योतिषी देव 5 उपयोग लेकर निकलते हैं। (हाँ)

(n) चक्रवर्ती नियमा साधु बनते हैं। (नहीं)

(o) मोहनीय कर्म का उदय 14 प्रकार से आता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	1वर्ष की स्थिति	(क) सूक्ष्म संपराय गुणस्थान	अप्रत्याख्यानी कषाय
(b)	संस्थान	(ख) उपयोग का थोकड़ा	6
(c)	नपुंसक वेद की आगति	(ग) नीच गोत्र	285
(d)	4 उपयोग	(घ) 20	सूक्ष्म संपराय गुणस्थान
(e)	काय योग	(च) नाम कर्म	अष्टस्पर्शी रूपी
(f)	हरिवास की गति	(छ) 48	126
(g)	बल मद	(ज) मोहनीय कर्म	नीच गोत्र
(h)	आतप	(झ) 6	नाम कर्म
(i)	स्त्यानगृद्धि निद्रा	(य) 7	दर्शनावरणीय कर्म
(j)	बाटे बहता की अपेक्षा	(र) 179	उपयोग का थोकड़ा
(k)	तेऊकाय की गति	(ल) अप्रत्याख्यानी कषाय	48
(l)	तीन विकलेन्द्रिय की आगति	(व) दर्शनावरणीय कर्म	179
(m)	70 कोड़ाकोड़ी सागरोपम	(क्ष) अष्टस्पर्शी रूपी	मोहनीय कर्म
(n)	13वें गुणस्थान में योग	(त्र) 126	7
(o)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद	(ज्ञ) 285	20

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a)	मुझमें जीव 5 उपयोग लेकर आते हैं और 5 उपयोग लेकर निकलते हैं।	5 अनुत्तर विमान
(b)	मैं सतत अभ्यास और विचार से विस्तृत होने वाली हूँ।	कार्मिकी बुद्धि
(c)	मै पिघले हुए घी के समान हूँ।	घनवाय
(d)	मुझमें 12 योग पाये जाते हैं।	देशविरति श्रावक गुणस्थान
(e)	हम मात्र देवगति में ही उत्पन्न होते हैं।	86 युगलिक
(f)	मेरी अवस्था में आयुष्य पूर्ण कर मरने वाले जीव नरक गति, देवगति एवं युगलिकों में उत्पन्न नहीं होते।	अपर्याप्त अवस्था
(g)	मैं केवल ज्ञान और यथाख्यात चारित्र को नहीं होने देती।	संज्वलन कषाय
(h)	मैं आत्मा के निराबाध गुण को प्रकट नहीं होने देता।	वेदनीय कर्म
(i)	मेरी 103 प्रकृतियाँ भी हैं।	नाम कर्म
(j)	मैं मेंढ़े के सींग के समान हूँ।	अप्रत्याख्यानी माया
(k)	मद नहीं करने से मेरी प्राप्ति होती है।	उच्च गौत्र
(l)	मेरी जघन्य स्थिति 2 समय बताई है।	साता वेदनीय
(m)	सातवीं नरक की आगति में मुझे छोड़ा है।	स्त्री व स्त्री नपुंसक को
(n)	मैं अपनी आयु पूर्ण कर सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ही उत्पन्न होता हूँ।	सातवीं नरक का जीव
(o)	5 शरीरों में से मुझे चौस्पर्शी रूपी में लिया है।	कार्मण शरीर

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) भवनपति में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं व कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ? नाम भी लिखिए।

उ. भवनपति में जीव 8 उपयोग- 3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 2 दर्शन लेकर जाते हैं एवं 5 उपयोग-2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 1 दर्शन लेकर निकलते हैं।

(b) आठवें गुणस्थान में पाये जाने वाले योग के भेदों के नाम लिखिए।

उ. 4 मन, 4 वचन एवं 1 औदारिक काय योग = 9 योग

(c) तीर्थंकर की आगति भेद सहित लिखिए।

उ. तीर्थंकर की आगति 38 की- 35 वैमानिक देवता 3 किल्विषी छोड़कर और पहली से तीसरी नरक, इन सब के पर्याप्त।

(d) अवाय किसे कहते हैं ?

उ. ईहा से जाने हुए पदार्थों में निश्चयात्मक ज्ञान होना अवाय है।

(e) कर्म प्रकृतियों के बंध के कारण का उल्लेख कहाँ पर आया हुआ है ?

उ. कर्म प्रकृतियों के बंध के कारण का उल्लेख भगवती सूत्र शतक 8, उद्देशक 9 में है।

(f) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की गति भेद सहित लिखिए।

उ. गति-395 की (56 अन्तर्द्वीपज, 51 जाति के देवता और पहली नरक, इन 108 के अपर्याप्त पर्याप्त 216+179 की लड़ =395)

(g) **अन्तराय कर्म की प्रकृतियाँ कौनसी है ?**

उ. 1. दानान्तराय, 2. लाभान्तराय, 3. भोगान्तराय, 4. उपभोगान्तराय और 5. वीर्यान्तराय।

(h) **ज्ञानावरणीय कर्म का उदय किन-किन प्रकारों से होता है ?**

उ. उदय दस प्रकार से- पाँच इन्द्रियों का आवरण तथा उन पाँच इन्द्रियों से होने वाले ज्ञान का आवरण।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3=(24)**

(a) **चौस्पर्शी रूपी के भेद लिखिए।**

उ. अठारह पाप, आठ कर्म, कार्मण शरीर, दो योग (मन,वचन), सूक्ष्म पुद्गलास्तिकाय का स्कंध। ये तीस भेद चौस्पर्शी रूपी के हैं।

(b) **निम्न बोलों को समझाइए-**

उ. **1. प्रमत्त संयत गुणस्थान में योग-14 (4 मन, 4 वचन, 6 काया कार्मणकाय योग को छोड़कर)**

2. क्षीण मोह गुणस्थान में योग- 9 (4 मन, 4 वचन, 1 औदारिक काय योग)

3. मिश्र गुणस्थान में जीव के भेद- 1 संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ता।

(c) **वासुदेव की आगति व गति लिखिए।**

उ. **वासुदेव की आगति 32 की-** (35 वैमानिक में से 5 अनुत्तर विमान को छोड़कर 30 वैमानिक देवता एवं पहली, दूसरी नरक, इनके पर्याप्त)

गति 14 की- (7 नरक के अपर्याप्त-पर्याप्त)

(d) **मांडलिक राजा की आगति व गति लिखिए।**

उ. माण्डलिक राजा की आगति 276 की- सन्नी मनुष्यवत् (99 जाति के देवता, 1 से 6 नरक, 179 की लड़ में से तेउकाय, वायुकाय के 8 भेद छोड़कर शेष 171 भेद)।

गति-535 की (563 भेदों में से 9 ग्रैवेयक एवं 5 अनुत्तर विमान देव के अपर्याप्त-पर्याप्त, इन 28 भेदों को छोड़कर)।

(e) **मोहनीय कर्म बंध के कारण लिखिए।**

उ. छह प्रकार से बान्धता है- 1. तीव्र क्रोध करने से, 2. तीव्र मान करने से, 3. तीव्र माया करने से, 4. तीव्र लोभ करने से, 5. तीव्र दर्शन मोहनीय से और 6. तीव्र चारित्र मोहनीय से।

(f) **प्रत्येक प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

उ. 1. अगुरुलघु, 2. उपघात, 3. पराघात, 4. उच्छ्वास, 5. आतप, 6. उद्योत, 7. निर्माण और 8. तीर्थंकर नाम।

(g) **साता वेदनीय कर्म का उदय किन-किन प्रकारों से होता है ?**

उ. 1. मनोज्ञ शब्द, 2. मनोज्ञ रूप, 3. मनोज्ञ गन्ध, 4. मनोज्ञ रस, 5. मनोज्ञ स्पर्श, 6. मन चाहे सुख, 7. अच्छे वचन और 8. निरोगी काया।

(h) **उपयोग के थोकड़े में कितने व कौन-कौनसे उपयोग नहीं होते हैं व क्यों ?**

उ. **उपयोग के थोकड़े में** मनःपर्याय ज्ञान, केवलज्ञान, चक्षुदर्शन तथा केवलदर्शन ये चार उपयोग नहीं बताये हैं। क्योंकि ये चारों उपयोग बाटा बहती अवस्था में नहीं मिलकर भव विशेष में स्थित होने पर ही मिलते हैं।

कक्षा : द्वितीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) वस्तु के विशेष धर्म को जानना कहलाता है-
(क) ज्ञान (ख)दर्शन
(ग) चारित्र (घ) तप (क)

(b) किस कर्म के प्रभाव से जीव विविध पर्यायों का अनुभव करता है-
(क) मोहनीय कर्म (ख) नाम कर्म
(ग) अन्तराय कर्म (घ) गौत्र कर्म (ख)

(c) मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ होती है-
(क) 5 (ख) 2
(ग) 28 (घ) 103 (ग)

(d) किस कर्म का अबाधाकाल नहीं होता है-
(क) ज्ञानावरणीय (ख) अन्तराय
(ग) आयु (घ) गौत्र (ग)

(e) छठी नरक की आगति होती है-
(क) 16 (ख) 40
(ग) 18 (घ) 17 (क)

(f) पहले किल्विषी की आगति होती है-
(क) 40 (ख) 50
(ग) 30 (घ) 46 (ग)

(g) गर्भज की गति होती है-
(क) 371 (ख) 563
(ग) 395 (घ) 285 (ख)

(h) मिश्र गुणस्थान में कितने योग होते हैं-
(क) 6 (ख) 7
(ग) 3 (घ) 10 (घ)

(i) अरूपी के भेद है-
(क) 15 (ख) 30
(ग) 61 (घ) 12 (ग)

(j) उपयोग के थोकड़े का उल्लेख श्री भगवती सूत्र के किस शतक में किया गया है-
(क) 13वें शतक में (ख) 14वें शतक में
(ग) 12वें शतक में (घ) 10वे शतक में (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) आयु कर्म आत्मा के अमरत्व गुण को प्रकट नहीं होने देता है। (हाँ)
(b) नपुंसक वेद कषाय मोहनीय का एक भेद है। (नहीं)
(c) न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान का एक भेद है। (हाँ)
(d) असातावेदनीय कर्म 12 प्रकार से बांधा जाता है। (हाँ)
(e) देवगति के 198 भेद होते हैं। (हाँ)
(f) समुच्चय जीव की आगति 563 होती है। (नहीं)
(g) बलदेव की गति अमर होती है। (हाँ)
(h) 14वें गुणस्थान में योग नहीं पाया जाता है। (हाँ)
(i) पुद्गलों के चौस्पर्शी और अष्टस्पर्शी दो भेद होते हैं। (हाँ)
(j) सातवी नारकी में जीव 3 अज्ञान लेकर जाते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिएः- **10x1 = (10)**

(a)	हड्डियों का स्तंभ	(क) गौत्र कर्म	अप्रत्याख्यानी
(b)	जुगुप्सा	(ख) अप्रत्याख्यानी	नो कषाय
(c)	विसंवाद रहितता	(ग) 6	शुभ नाम कर्म
(d)	2 हजार वर्ष	(घ) बुद्धि	गौत्र कर्म
(e)	उरपरिसर्प	(च) नो कषाय	तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(f)	5 ऐरण्यवत	(छ) तिर्यंच पंचेन्द्रिय	अकर्मभूमिज
(g)	सर्वार्थसिद्ध आगति	(ज) 12	15
(h)	लेश्या	(झ) 15	6
(i)	कार्मिकी	(य) अकर्मभूमिज	बुद्धि
(j)	उपयोग	(र) शुभ नाम कर्म	12

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मेरे प्रभाव से जीव आत्मा के अनन्त आत्म सामर्थ्य नामक गुण की घात करता है।	अन्तराय
(b)	मेरी एक उत्तर प्रकृति स्त्यानगृद्धि है।	दर्शनावरणीय
(c)	मेरा अबाधाकाल होता भी है और नहीं भी होता है।	आयु
(d)	मेरी आगति 32 की तथा गति 14 की है।	वासुदेव
(e)	मेरी आगति 38 की तथा गति मोक्ष है।	तीर्थंकर
(f)	मेरा अपर्याप्त अवस्था में ही मरण हो जाता है, अतः मेरा पर्याप्ता भेद नहीं होता।	सम्मूर्च्छिम मनुष्य
(g)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें योग के 7 भेद पाये जाते हैं।	सयोगी केवली गुणस्थान
(h)	मैं लेश्या का एक भेद हूँ, जो 8वें से 13वें गुणस्थान में भी पाया जाता हूँ।	शुक्ल लेश्या
(i)	मैं ज्ञान का एक भेद हूँ, तथा मेरे उपभेद अवग्रह, ईहा, अवाय धारणा है।	मतिज्ञान
(j)	मैं एक ऐसा भंग हूँ, जो अरूपी द्रव्यों एवं चतुस्पर्शी पुद्गलों में ही पाया जाता है।	अगुरुलघु

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) नो कषाय मोहनीय की उत्तर प्रकृतियाँ लिखिए।

उ. हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद।

(b) आयु कर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से जीव चारों गतियों में अमुख काल के लिए रूका रहे, उसे आयु कर्म कहते हैं।

(c) नरकायु के चार कारण लिखिए।

उ. 1. महाआरम्भ करने से। 2. महा परिग्रह करने से।
3. मद्य-मांस का सेवन करने से और 4. पंचेन्द्रिय जीवों की घात करने से।

(d) अशुभ नामकर्म के बंध के चार कारण लिखिए।

उ. 1. मन की वक्रता। 2. वचन की वक्रता।
3. काया की वक्रता और 4. विसंवाद (कलह) योग सहितता

(e) वेदनीय कर्म की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

उ. जघन्य- 12 मुहूर्त्त और उत्कृष्ट- 30 कोड़ाकोड़ी सागरोपम।

(f) पहले किल्विषी की आगति एवं गति समझा करके लिखिए।

उ. पहले किल्विषी की आगति 30 की- (15 कर्मभूमिज मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यञ्च, 5 देवकुरु, 5 उत्तरकुरु इन सभी के पर्याप्त)।
गति-46 की (15 कर्मभूमिज मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यञ्च, बादर पृथ्वीकाय, बादर अप्काय और बादर वनस्पतिकाय, इन 23 के अपर्याप्त और पर्याप्त)

(g) आराधक साधुजी की आगति एवं गति लिखिए।

उ. आराधक साधुजी की आगति 275 की- (सन्नी मनुष्य की 276 की आगति में से छठी नरक का पर्याप्त छोड़कर)। गति- 70 जाति के देवता (38 वैमानिक में से 3 किल्विषी को छोड़कर शेष 35 के पर्याप्त-अपर्याप्त) या मोक्ष।

(h) माण्डलिक राजा की आगति एवं गति लिखिए।

उ. माण्डलिक राजा की आगति 276 की- सन्नी मनुष्यवत्।
गति 535 की- (563 भेदों में से 9 ग्रैवेयक एवं 5 अनुत्तर विमान देव के अपर्याप्त-पर्याप्त, इन 28 भेदों को छोड़कर)

(i) बासठिया के अन्तर्गत 61 बोल कौन-कौन से होते हैं ?

उ. जीव के भेद 14, गुणस्थान-14, योग-15, उपयोग-12, लेश्या-6, इस प्रकार बासठिया के अन्तर्गत ये कुल 61 बोल।

(j) अष्टस्पर्शी रूपी के 15 भेद लिखिए।

उ. अष्टस्पर्शी रूपी के 15 भेद- छह द्रव्य लेश्या, चार शरीर (औदारिक, वैक्रिय, आहारक और तैजस), घनोदधि, घनवाय, तनुवाय, काययोग, बादर पुद्गलास्तिकाय का स्कन्ध (इनमें द्वीप, समुद्र, नरक, पृथ्वियाँ, विमान और सिद्धशिला सम्मिलित हैं)।

(k) बुद्धि के चार भेद लिखिए।

उ. बुद्धि के चार भेद- 1. औत्पातिकी, 2. वैनयिकी, 3. कार्मिकी, 4. पारिणामिकी।

(l) पाँच अनुत्तर विमान में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ?

उ. पाँच अनुत्तर विमान में जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं- 3 ज्ञान, 2 दर्शन (अचक्षु और अवधिदर्शन) और ये 5 उपयोग ही लेकर निकलते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3 = (36)

(a) मोहनीय कर्म किसे कहते हैं? यह कर्म आत्मा के किस गुण का घात करता है ?

उ. जिसमें आत्मा मोहित (सत् और असत् के ज्ञान से हीन) हो जाये, उसे 'मोहनीय कर्म' कहते हैं। यह कर्म आत्मा के क्षायिक समकित तथा अनन्त वीतरागता नामक गुण का घात करता है।

(b) कषाय मोहनीय की सोलह प्रकृतियाँ लिखिए।

उ. अनन्तानुबंधी- 1. क्रोध, 2. मान ,3. माया, 4. लोभ ,5. अप्रत्याख्यानी क्रोध 6. मान, 7. माया, 8. लोभ , 9. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, 10. मान , 11. माया, 12. लोभ , 13. संज्वलन क्रोध 14. मान, 15. माया, 16. लोभ।

(c) त्रस दशक एवं स्थावर दशक के भेदों के नाम लिखिए।

उ. त्रस दशक- त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशःकीर्ति नाम।
स्थावर दशक- स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय और अयशःकीर्तिनाम।

(d) अशुभ नाम कर्म का उदय कितने प्रकार से होता है ? उल्लेख कीजिए।

उ. अशुभ नाम कर्म का उदय 14 प्रकार से होता है-1. अनिष्ट शब्द, 2. अनिष्ट रूप, 3. अनिष्ट गंध, 4. अनिष्ट रस, 5. अनिष्ट स्पर्श, 6. अनिष्ट गति, 7. अनिष्ट स्थिति, 8. अनिष्ट लावण्य, 9. अनिष्ट

यशोकीर्त्ति, 10. अनिष्ट उत्थान-कर्म-बल-वीर्य पुरुषाकार पराक्रम, 11. हीन स्वर, 12. दीन स्वर, 13. अप्रिय स्वर और 14. अमनोज्ञ स्वर।

(e) निम्न कर्मों की जघन्य, उत्कृष्ट, स्थिति एवं अबाधाकाल लिखिए-
1. दर्शनावरणीय 2. नामकर्म 3. अन्तराय कर्म।

उ.

कर्म का नाम	जघन्य	उत्कृष्ट स्थिति	आबाधाकाल
1. दर्शनावरणीय	अन्तर्मुहूर्त्त	30 कोड़ाकोड़ी सागरोपम	3 हजार वर्ष
2. नामकर्म	आठ मुहूर्त्त	20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम	2 हजार वर्ष
3. अन्तराय कर्म	अन्तर्मुहूर्त्त	30 कोड़ाकोड़ी सागरोपम	3 हजार वर्ष

(f) मनुष्य गति के 303 भेद लिखिए।

उ. मनुष्य गति के 303 भेद- 15 कर्मभूमिज (5 भरत, 5 ऐरावत, 5 महाविदेह), 30 अकर्मभूमिज (5 देवकुरु, 5 उत्तरकुरु, 5 हरिवास, 5 रम्यक्वास, 5 हेमवत, 5 ऐरण्यवत), 56 अन्तर्द्वीपज, इन 101 सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त और पर्याप्त के भेद से 202 भेद। 101 सन्नी मनुष्य के चौदह अशुचि स्थानों से उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम असंज्ञी अपर्याप्त मनुष्य के 101 भेद। इस प्रकार 202+101= 303 भेद हुए।

(g) इक्कावन जाति के देवता की आगति एवं गति का उल्लेख कीजिए।

उ. इक्कावन जाति के देवता की आगति 111 की- (101 सन्नी मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय एवं 5 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, इन सब के पर्याप्त)
गति 46 की- (15 कर्मभूमिज मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, बादर पृथ्वीकाय, बादर अप्काय और बादर वनस्पतिकाय, इन 23 के पर्याप्त एवं अपर्याप्त)

(h) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कौन-कौन से जीव कौन-कौन सी नारकियों में उत्पन्न हो सकते हैं ?

उ. भुजपरिसर्प- दूसरी नरक तक। खेचर-तीसरी नरक तक। स्थलचर-चौथी नरक तक
उरपरिसर्प- पाँचवीं नरक तक। जलचर- छठी व सातवीं नरक तक उत्पन्न हो सकते हैं।

(i) पहले, तीसरे एवं छठे गुणस्थान में योग, उपयोग एवं लेश्या का उल्लेख कीजिए।

उ.

गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
1. मिथ्यात्व गुणस्थान	13	6	6
2. मिश्र गुणस्थान	10	6	6
3. प्रमत्तसंयत गुणस्थान	14	7	6

(j) अरूपी के 61 भेद लिखिए।

उ. अरूपी के 61 भेद- 18 पाप की विरति (त्याग), 12 उपयोग, 6 भाव लेश्या, 5 द्रव्य (पुद्गलास्तिकाय को छोड़कर), 4 बुद्धि (औत्पातिकी, वैनयिकी, कार्मिकी, पारिणामिकी), 4 भेद मतिज्ञान के (अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा), 3 दृष्टि, 5 शक्ति (उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषाकार पराक्रम), 4 संज्ञा।

(k) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ?

उ. तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं- 2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 1 अचक्षुदर्शन तथा 8 उपयोग लेकर निकलते हैं- 3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 2 दर्शन (अचक्षु व अवधि)

(l) मिथ्यादृष्टि व मिश्रदृष्टि की आगति लिखिए।

उ. मिथ्यादृष्टि की आगति 371 की- (563 में से 7 नारकी, 86 युगलिक मनुष्य और 99 जाति के देवता, इन 192 के अपर्याप्त को छोड़कर)
मिश्रदृष्टि की आगति 363 की- (समुच्चय जीव की आगति 371 में से तेउकाय, वायुकाय के 8 भेद छोड़कर)

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : द्वितीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) वस्तु के सामान्य धर्म को जानना कहलाता है -

(क) ज्ञान (ख) दर्शन

(ग) चारित्र (घ) तप (ख)

(b) दर्शन मोहनीय कर्म की प्रकृति नहीं है-

(क) मिथ्यात्व मोहनीय (ख) मिश्र मोहनीय

(ग) कषाय मोहनीय (घ) सम्यक्त्व मोहनीय (ग)

(c) किस कर्म की स्थिति सबसे उत्कृष्ट होती हैं-

(क) नाम कर्म (ख) वेदनीय कर्म

(ग) मोहनीय कर्म (घ) आयु कर्म (ग)

(d) मनुष्य गति के कितने भेद होते हैं-

(क) 14 (ख) 48

(ग) 198 (घ) 303 (घ)

(e) दूसरी नरक की आगति है-

(क) 20 (ख) 19

(ग) 18 (घ) 16 (क)

(f) तीर्थंकर की आगति है-

(क) 82 (ख) 83

(ग) 38 (घ) 25 (ग)

(g) तीसरे गुणस्थान में योग होते हैं-

(क) 13 (ख) 10

(ग) 12 (घ) 14 (ख)

(h) अरूपी के 61 भेदों में मतिज्ञान के भेद हैं-

(क) 6 (ख) 4

(ग) 5 (घ) 12 (ख)

(i) सातवीं नारकी में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं-

(क) 2 (ख) 8

(ग) 7 (घ) 5 (घ)

(j) 5 उपयोग लेकर आते हैं : 5 उपयोग लेकर निकलते हैं-

(क) वाणव्यन्तर (ख) पाँच अनुत्तर विमान

(ग) पहला देवलोक (घ) भवनपति (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) अनन्तानुबंधी कषाय की स्थिति जीवन पर्यन्त होती है। (हाँ)

(b) जीव पर अनुकम्पा करने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है। (नहीं)

(c) आयुकर्म का अबाधाकाल नहीं होता है। (हाँ)

(d) सम्मूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। (हाँ)

(e) असन्नी मनुष्य की आगति 171 की होती है। (हाँ)

(f) गर्भज की गति 285 की होती है। (नहीं)

(g) उपशांत मोहनीय गुणस्थान में गुणस्थान एक ही होता है। (हाँ)

(h) निवृत्ति बादर गुणस्थान में लेश्या एक ही होती है। (हाँ)

(i) संसार में जो भी पुद्गल दृष्टिगोचर होते हैं, वे अष्टस्पर्शी स्कंध होते हैं। (हाँ)

(j) तीन विकलेन्द्रिय में जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	किरमिची रंग	(क) 20 भेद	लोभ
(b)	मन की वक्रता	(ख) 30 भेद	अशुभ नाम कर्म
(c)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(ग) बुद्धि	20 भेद
(d)	बलदेव की गति	(घ) 02	अमर
(e)	पहले गुणस्थान में उपयोग	(च) लोभ	6
(f)	चौस्पर्शी रूपी	(छ) 8	30 भेद
(g)	वैनयिकी	(ज) 12	बुद्धि
(h)	उपयोग के भेद	(झ) अमर	12
(i)	तीसरी नरक में उपयोग लेकर जाना	(य) 6	8
(j)	पाँच स्थावर में अज्ञान	(र) अशुभ नामकर्म	2

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a)	मेरे द्वारा जीव सत् और असत् के ज्ञान से हीन हो जाता है।	मोहनीय कर्म
(b)	मेरे प्रभाव से जीव अपने अगुरुलघु गुण को प्रकट नहीं कर पाता है।	गोत्र कर्म
(c)	मैं ऐसी कषाय हूँ, जिसमें मरकर जीव देवगति में जाता है।	संज्वलन कषाय
(d)	मेरी जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त है।	वेदनीय कर्म
(e)	मेरी आगति 108 की तथा गति मोक्ष है।	केवली
(f)	मेरी आगति 38 की तथा गति मोक्ष है।	तीर्थंकर
(g)	मेरी आगति 276 की तथा गति 42 की है।	आराधक श्रावक
(h)	मैं देवगति का एक भेद हूँ तथा मेरे 15 भेद हैं।	परमाधामी
(i)	मैं उपयोग का थोकड़ा हूँ, मेरा उल्लेख किस सूत्र में किया गया है।	भगवती सूत्र
(j)	मैं उपयोग का 11वाँ भेद हूँ।	अवधि दर्शन

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति तथा उत्कृष्ट अबाधाकाल लिखिए।

उ. जघन्य स्थिति- आठ मुहूर्त्त

उत्कृष्ट अबाधाकाल- 2 हजार वर्ष

(b) मनुष्यायु बन्ध के चार कारण लिखिए।

उ. मनुष्यायु बन्ध के कारण- 1. प्रकृति से सरल, 2. प्रकृति से विनीत, 3. दयावन्त, 4. मत्सर (ईर्ष्या) भाव से रहित

(c) प्रत्येक प्रकृति के 8 भेद लिखिए।

उ. अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, निर्माण और तीर्थंकर नाम।

(d) उच्च गौत्र कितने प्रकार से बंधता है ? नाम लिखिए।

उ. उच्च गोत्र आठ प्रकार से जीव बान्धता है- 1. जाति (मातृपक्ष), 2. कुल (पितृपक्ष), 3. बल, 4. रूप, 5. तप, 6. श्रुत, 7. लाभ और 8. ऐश्वय मद नहीं करने से।

(e) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद लिखिए।

उ. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के- जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प इन पाँच भेदों के सन्नी, असन्नी, अपर्याप्त और पर्याप्त, ये चार-चार भेद होने से 5X4=20 भेद।

(f) 15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति एवं गति लिखिए।

उ. 15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति 276 की- (99 जाति के देवता, पहली से छठी तक ये छः नरक, एवं 179 की लड़ में से तेउकाय, वायुकाय के 8 भेद छोड़कर 171 की, इस प्रकार 171+99+6=276)

15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की गति 563 की।

(g) देवकुरु-उत्तरकुरु के युगलिक आयुष्य पूर्ण कर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

उ. पहले किल्विषी तक - (भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी पहला, दूसरा देवलोक तथा पहला किल्विषी में)

(h) सातवें गुणस्थान में कितनी लेश्या पायी जाती हैं ? उनके नाम लिखिए।

उ. 1. तेजो 2. पद्म 3. शुक्ल लेश्या।

(i) चौस्पर्शी रूपी के 30 भेद लिखिए।

उ. चौस्पर्शी रूपी के 30 भेद- अठारह पाप, आठ कर्म, कार्मण शरीर, दो योग (मन, वचन), सूक्ष्म पुद्गलास्तिकाय का स्कंध। ये 30 भेद चौस्पर्शी रूपी के हैं।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 8x4=(32)

(a) ज्ञानावरणीय कर्म के बंध एवं उदय के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

उ. ज्ञानावरणीय कर्म जीव छह प्रकार से बान्धता है-

1. ज्ञान और ज्ञानी का अवर्णवाद करे अथवा अवगुण निकाले।

2. ज्ञान और ज्ञानी की निन्दा करे व उनका उपकार न माने।

3. ज्ञान सीखने में अन्तराय देवे।

4. ज्ञान और ज्ञानी की अशातना करे।

5. ज्ञान और ज्ञानी से द्वेष करे।

6. ज्ञान व ज्ञानी से झूठा विषमवाद (झगड़ा) करें।

उदय दस प्रकार से- पाँच इन्द्रियों का आवरण तथा उन पाँच इन्द्रियों से होने वाले ज्ञान का आवरण।

(b) असाता वेदनीय कर्म कितने प्रकार से बंधता हैं तथा कितने प्रकार से भोगा जाता हैं ?

उ. असाता वेदनीय कर्म जीव 12 प्रकार से बान्धता है-1. प्राण, भूत, जीव और सत्व को दुःख देने से, 2. बहुत जीवों को दुःख देने से, 3. शोक कराने से,4. बहुत जीवों को शोक कराने से, 5. रूलाने से, 6. बहुत जीवों को रूलाने से, 7. झुराने से, 8. बहुत जीवों को झुराने से, 9. मार-पीट करने से, 10. बहुत जीवों को मार-पीट करने से, 11. परिताप उपजाने से और 12. बहुत जीवों को परिताप उपजाने से।

आठ प्रकार से उदय- 1. अमनोज्ञ शब्द, 2. अमनोज्ञ रूप, 3. अमनोज्ञ गंध, 4.अमनोज्ञ रस, 5. अमनोज्ञ स्पर्श, 6. मन का दुःख 7. वचन का दुःख और 8. काया का दुख।

(c) नाम कर्म की निम्न प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. 1. संघातन औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण संघातन।

2. संहनन वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलक और सेवार्त्त संहनन

3. अंगोपाग औदारिक, वैक्रिय और आहारक अंगोपांग

4. आनुपूर्वी नरकानुपूर्वी, तिर्यंचानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी और देवानुपूर्वी।

(d) मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियों के नाम क्रम से लिखिए।

उ. दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियाँ- 1. मिथ्यात्व मोहनीय, 2. मिश्र मोहनीय और 3. सम्यक्त्व मोहनीय

चारित्र मोहनीय के भी दो भेद- कषाय मोहनीय और नो कषाय मोहनीय। कषाय मोहनीय की 16 प्रकृतियाँ हैं- अनन्तानुबन्धी - 1. क्रोध, 2. मान, 3. माया, 4. लोभ, 5. अप्रत्याख्यानी क्रोध, 6. मान, 7. माया, 8. लोभ, 9. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, 10. मान, 11. माया, 12.लोभ, 13. संज्वलन क्रोध, 14. मान, 15. माया, 16. लोभ। नो कषाय मोहनीय की 9 प्रकृतियाँ- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसक वेद।

(e) मनुष्य गति के 303 भेदों को लिखिए।

उ. मनुष्य गति के 303 भेद- 15 कर्मभूमिज (5 भरत, 5 ऐरवत, 5 महाविदेह), 30 अकर्मभूमिज- (5 देवकुरु, 5 उत्तरकुरु, 5 हरिवास, 5 रम्यक्वास, 5 हेमवत, 5 ऐरण्यवत), 56 अन्तर्द्वीपज, इन 101 सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त और पर्याप्त भेद से 202 भेद। एक सौ एक सन्नी मनुष्य के चौदह अशुचि स्थानों से उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम असंज्ञी अपर्याप्त मनुष्य के 101 भेद। इस प्रकार 202+101=303 भेद हुए।

(f) स्त्रीवेद, पुरुषवेद एवं नपुंसकवेद की आगति एवं गति लिखिए।

उ. स्त्रीवेद की आगति 371 की- (समुच्चय जीववत् 563 में से 7 नारकी, 86 युगलिक मनुष्य और 99 जाति के देवता, इन 192 के अपर्याप्त को छोड़कर शेष 371 की)।

गति-561 की (सातवीं नरक का अपर्याप्त-पर्याप्त छोड़कर)

पुरुषवेद की आगति 371 की-(समुच्चय जीववत्)। गति-563 की।

नपुंसकवेद की आगति 285 की (179 की लड़, 99 जाति के देवता और सात नरक के पर्याप्त)

गति-563।

(g) चौदह गुणस्थानों में से एक से चार तक गुणस्थानों के बासठिया का प्रारूप लिखिए।

उ. गुणस्थानों के नाम	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
1. मिथ्यात्व गुणस्थान	14	1	13	6	6
2. सास्वादन गुणस्थान	6	1	13	6	6
3. मिश्र गुणस्थान	1	1	10	6	6
4. अविरत सम्यग्दृष्टि गुण.	2	1	13	6	6

(h) अरूपी के 61 भेद लिखिए।

उ. अरूपी के 61 भेद - 18 पाप की विरति (त्याग), 12 उपयोग, 6 भाव लेश्या, 5 द्रव्य (पुद्गलास्तिकाय को छोड़कर), 4 बुद्धि (औत्पातिकी, वैनयिकी, कार्मिकी, पारिणामिकी), 4 भेद मतिज्ञान के (अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा), 3 दृष्टि, 5 शक्ति (उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषाकार पराक्रम), 4 संज्ञा।